B.A. III
Hist

भारत बर्मा के बीच सांस्कृतिक सम्बन्ध

द० पू० ए० के देशों में इस्लाम धर्म के प्रचार हो जाने के कारण भारतीय धर्मों का ह्रास हो गया था। इसमें बर्मा ही ऐसा देश रहा जहां पर आज भी भारतीय संस्कृति, धर्म, भाषा का प्रभाव स्थापित है। बर्मा निवासी आज भी बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं और पाली भाषा का अध्ययन-अध्यापन होता है। पुरातात्विक प्रमाणों से यह भी सिद्ध हो चुका है कि बर्मा निवासी शिव और वैष्णव की भी पूजा करते थे क्योंकि इन देवताओं की मूर्तियाँ वहां पर मिली हैं।

7वीं शताब्दी ई० बौद्ध धर्म का ह्रास हो गया लेकिन बर्मा में ह्रास न हो कर साहित्य और दर्शन में निरन्तर विकास होता रहा। बर्मा में बहुत से ग्रन्थ सं- पाली भाषा में लिखे गये। और पाली भाषा का निरन्तर विकास के लिए प्रयत्नशील रहे। पाली भाषा भी एक भारतीय भाषा है जैसा कि संस्कृत भाषा। बर्मा और भारत के आपसी संबंध के इस भाषा को बर्मा निवासियों ने अपनाया। 1442 ई० के एक अभिलेख मिला है जिसको एक बर्मा के शासनाधिकारी ने उत्कीर्ण कराया था।

बर्मा पर भारत का ~~प्रभाव~~ काफी प्रभाव बना रहा। बर्मा में मिलने भी गांव और शहरों का नामकरण हुआ उसका नाम भारतीय थे। जो भी भारतीय उपनिवेशिक बर्मा में गए वहां पर अपने गांव और बस्तियों का नाम रखे। बर्मा में गान्धार, कम्बोज, अपरान्त, कुसुमपुर, मिथिला, पुष्करावती, राजगृह, वैशाली, चम्पानगर

इत्यादि नामों से नगरीयां वहां बसाई गई। भारत के जो भी बौद्धधर्म के अनुयायी बरमा में जाकर बसे व लोग अपने कुल प्रदेशों को यही कुल रखें जिनका सम्बन्ध भगवान बुद्ध से था। भारत निवासियों (बर्मी) ने नवीन देशों में विभिन्न स्थानों से सम्बन्ध बुद्ध से जोड़ दिया ताकि उन्हें भी उसी प्रकार पवित्र समझा जा सके जो सो भारत में बोधगया, सारनाथ, कपिलवस्तु इत्यादि पवित्र स्थान माने जाते हैं। ऐसी कल्पना की जाती है कि भगवान बुद्ध बरमा भी आए थे। उन्होंने अनेक राजाओं के राजवंशों का सम्बन्ध भी शाक्य कुल के साथ जोड़ दिया, क्योंकि बुद्ध का जन्म कुल में हुआ था।

मौर्य साम्राज्य के इतिहास में राजा अशोक का महत्वपूर्ण स्थान था। राजा अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए एक विशेष अभियान चलाया था। इस स्थिति में बर्मा के बौद्ध अशोक उनके कुल को भी यहां जुड़ सकते हैं।

बरमा के उत्तरी दिशा में इरावदी नदी के तट पर एक "मौर्य" नाम से एक प्रदेश है, जिसे अशोक के समय बौद्ध प्रचारकों ने अपना कार्यक्षेत्र बनाया था।

बरमा में जिन स्तूपों, विहारों और मन्दिरों आदि का निर्माण कराया गया वे भारतीय वस्तुशिल्प के अनुसार बनाए गए थे। इसका प्रमाण राजा अनिरुद्ध द्वारा निर्मित श्वेजिगान स्तूप है जो कि एक विशाल ठोस महास्तूप

महत्वपूर्ण है। जिसमें सारे तथा देवताओं के मूर्ति है। श्वेजिगोन मन्दिरों का निर्माण भारतीय वास्तुशिल्प के अनुसार किया गया था उस समय भारत से बर्मा में काफी बौद्ध भिक्षु बर्मा गए थे। और बर्मा के भिक्षु भी तीर्थयात्रा के लिए भारत आते-रहते थे।

बर्मा की एक पुरानी कथा के अनुसार बर्मा का एक महाधार्मिक प्रतिवर्ष भारत आया करता था और वाराणसी से मूर्ति खरीदकर उन्हें पेगू में बेच देता था यह स्वाभाविक था कि यह मूर्तियाँ बर्मा की मूर्तिकला को प्रभावित करें। केनजित्था ने जिस आनन्द विहार का निर्माण कराया था, वह पूर्णतया भारत के विहारों की अनुकृति है। इस विहार पर भारत कितना प्रभाव था है। इस सम्बन्ध में - पुरातत्व विभाग के डुरोइसल का कथन है कि "इसमें कोई सन्देह नहीं, कि जिन वास्तुशिल्पियों ने आनन्द विहार का निर्माण किया था, वे भारतीय ही थे। शिखर से लेकर आधार तक इस विहार में जो कुछ भी है सब भारतीय है। इसके गलियारों में जो प्रस्तर मूर्तियाँ है इसकी दिवारों तथा छतों पर मिट्टी की जो सजावटें हैं सब पर भारतीय प्रतिभा तथा शिल्प की छाप स्पष्ट रूप से विद्यमान है -- यद्यपि इस आनन्द विहार का निर्माण बर्मा की ~~स्तूप~~ राजधानी में किया गया था, पर इसे भारतीय विहार ही माना जा सकता है।

बर्मा में बहुत से

विहारों, मन्दिरों आदि के बहुत से अवशेष विद्यमान हैं बहुत से तो मुर्तियां नष्ट हो चुकी हैं। बहुत से तो अभी-भी सुरक्षित हैं। अनुमान किया जाता है कि इसका भी निर्माण भी भारतीय वास्तु शिल्प के अनुसार किया गया था। यह लगभग 11 वीं या 12 वीं शताब्दी का माना है।

उपयुक्त विवरणों से प्रतिमाओं एवं मुर्तियों, विहारों का जो वर्णन से निश्चित किया गया यह भारतीय प्रभाव है भारतीय संस्कृति के विकास के कारण ही वर्मा-वासियों ने भारतीय संस्कृति, भाषा, धर्म, वस्तुकला को अपनाया।

Scanned with CamScanner